रमेश कुमार
प्रवक्ता - हिंदी
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मथुरा

मौलिक लेखन का अर्थ

- जब कोई व्यक्ति किसी विषय पर व्यक्तिगत रूप से चिंतन मनन करके अपनी एक सोच बनाता है तो उसे उस व्यक्ति का मौलिक विचार कहा जाता है किंतु जब वही व्यक्ति अपनी निजी विचारों को शुद्ध ,सुनिश्चित शब्दावली तथा अपनी शैली में लिखित रूप में प्रकाशित करता है तो उसे मौलिक लेखन कहा जाता हैं।

मौलिक लेखन के उद्देश्य

- विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे अपने विचारों को स्पष्टता पूर्वक क्रमबद्ध रूप से तथा शुद्ध भाषा में लिख सकें।
- छात्रों के शब्द भंडार को बढ़ाना तथा उनका सफलतापूर्वक प्रयोग करना सिखाना।
- विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार विषयों पर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- छात्र विभिन्न प्रकार की शैलियों के विषय में जान सके और अपनी एक स्वतंत्र शैली का निर्माण कर सकें।
- मौलिक लेखन के दवारा छात्रों को इस योग्य बनाना कि वह बड़ी से बड़ी बातों को संक्षिप्त रूप में लिख सकें।
- बच्चों में स्थाई साहित्य का सृजन करने की क्षमता विकसित करना।
- छात्रों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करना और जिसमें भाषा संबंधी प्रतिभा दिखे उसे लेखन के लिए प्रोत्साहित करना।

मौलिक लेखन की विधा

- संवाद या नाटक लिखना
- कहानी लिखना
- निबंध लिखना
- सूचना या समाचार लिखना
- काव्य की रचना करना
- वर्णन लिखना

मौलिक लेखन शिक्षण की विधियां

- देखो और रचो विधि
- प्रश्नोत्तरी विधि
- उद्‌बोधन विधि

मौलिक लेखन कार्य करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- शब्दों एवं भाव का उचित स्थान एवं क्रम के अनुसार रखना।
- असावधानी से शब्दों को बार-बार न दोहराना।
- लेखन में ऐसे वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिससे अर्थ स्पष्ट न हो।
- लेखन में छोटे-छोटे वाक्यों को लिखना।
- मौलिक लेखन में विराम चिन्हों का उचित स्थानों पर प्रयोग किया जाए।
- भाषा में बोलचाल के शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग हो जिससे भाषा में सरलता और माधुरी आ सके।
- मौलिक लेखन में इस बात का ध्यान रखा जाए कि विषय से छात्रों का ध्यान न भटके ।

धन्यवाद